संपादक का नोट

मसीह में मेरे सभी प्रिय भाइयों और बहनों को मैं अभिवादन करती हूँ। यह वर्ष का वह समय है जहाँ हम सभी ''हार्वेस्ट उत्सव'' मनाने जा रहे हैं, हालाँकि इस वर्ष यह एक अलग प्रकार का उत्सव होगा! हालांकि, हमें यह याद रखना चाहिए कि हार्वेस्ट एक दिन का उत्सव नहीं है, बल्कि प्रतिदिन का उत्सव है, क्योंकि हर दिन हमें अपने जीवन में कुछ न कुछ जरुरत है जिस के लिए हमें प्रभु का आभार मन्ना चाहिए। इसलिए, आइए हम अपने प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह कि हर दिन सराहना करें और आभारी रहें!

मत्ती 5:16 कहता है ''उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने ऐसा चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, बड़ाई करें।'' हमें, परमेश्वर के बच्चों को, यह याद रखना चाहिए कि हम सामान्य लोग नहीं हैं, हम एक चुनी हुई पीढ़ी हैं। हमें हमारे प्रभु परमेश्वर द्वारा चुना गया है और इस दुनिया में अच्छे काम करने के लिए कहा गया है – जो कि अतः हमारे परमेश्वर के राज्य की ओर एक कदम है। हमारे लिए यह जानना महत्वपूर्ण है कि हम जो भी अच्छा काम करते हैं, उसके अनुसार हम अपने सांसारिक जीवन के साथ–साथ अपने अनन्त जीवन में भी भरपूर आशीष पाते हैं।

एक बार यीशु ने बैतनिय्याह की यात्रा की और वह एक महिला से मिले जिसने उनके लिए अच्छे काम किए थे। जिन लोगों ने इस काम को देखा, वे उसके बारे में बड़बड़ाए, फिर भी यीशु ने क्या कहा? मरकुस
14:3–6 ''3 जब वह बैतनिय्याह में शमौन कोढ़ी के घर भोजन करने बैठा हुआ था, तब एक स्त्री संगमरमर के पात्र में जटामांसी का बहुमूल्य शुद्ध इत्र लेकर आई; और पात्र तोड़ कर इत्र को उसके सिर पर उण्डेला। 4
परन्तु कोई कोई अपने मन में रिसियाकर कहने लगे, "इस इत्र का क्यों सत्यानाश किया गया? 5 क्योंकि यह
इत्र तो तीन सौ दीनार से अधिक मूल्य में बेचा जा कर कंगालों में बाँटा जा सकता था।" और वे उसको
झिड़कने लगे। 6 यीशु ने कहा, "उसे छोड़ दो; उसे क्यों सताते हो? उस ने तो मेरे साथ भलाई की है।'' चाहे दुनिया इसे जाने या न जाने, परंतु परमेश्वर आपके और उनके राज्य के लिए अच्छे कामों को जानते है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि दुनिया के लोग या यहां तक कि आपके परिवार के लोग आपको कोई नाम रखते हैं; याद रखें, प्रभु हर उस अच्छे काम को देखते है जो आप उनके लिए कर रहे हैं और हमारे जीवन के अंत में यह सब मायने रखता है। हमें अपने अच्छे कामों में दिन–बर–दिन, महीने–पर–महीने और साल–दर–साल यहोवा के लिए बढ़ते रहना चाहिए। इसलिए अंत में जब हम अपने सांसारिक निवास को छोड़ देते हैं, तो यीशु अपने स्वर्गीय पिता आप के बारे में यह कहते हुए गवाही देंगे कि ''पिता परमेश्वर, उसने मेरे लिए अच्छे काम किए हैं!''

इस दुनिया में, अनन्त जीवन पाने के लिए, हमें अपने जीवन को अधिक धैर्य और परिश्रम के साथ जीना चाहिए, क्योंकि न्याय के दिन, जब हमें परमेश्वर के सामने खड़ा होना होगा, तो हमें अपने सभी कार्यों और कृति के लिए जवाब देना होगा। सुलैमान एक बुद्धिमान राजा था और प्रभु ने उसे अपने राज्य की देखभाल के लिए असीमित धन और बुद्धि का आशीर्वाद दिया। लेकिन आखिर में सुलैमान भी लड़खड़ा गया। इसलिए अनंत जीवन के लिए खोज निरंतर है और हमें प्रभु के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ और अच्छा काम करने के लिए प्रतिदिन प्रयास करना होगा। 2 थिस्सलुनीकियों 2:17 ''तुम्हारे मनों में शान्ति दे और तुम्हें हर एक अच्छे काम और वचन में दृढ़ करे।'' जब हम सच्चाई के साथ प्रभु के लिए खड़े होते हैं, तो वह हमें शक्ति प्रदान करेंगे, शांति और अधिकार के साथ जीवन जीने के लिए हमारे सिर को ऊंचा उठाएंगे। हमें केवल यह याद रखना है कि अनन्त जीवन की खोज में हमें कभी भी किसी भी तरह से प्रभु को नाराज नहीं करना चाहिए, चाहे वह हमारे शब्द हो या फिर कार्यों में ! इसलिए, न केवल एक मिनट या एक दिन या एक साल या कुछ साल, लेकिन, हर पल हमारे प्रभु परमेश्वर के साथ चलते रहना चाहिए। परमेश्वर के वचन पर मनन करें क्योंकि वचन ज्योति और सत्य है जो आपको कभी ठोकर नहीं खाने देगा। प्रभु की आज्ञाओं का पालन करें और अंत में आप न केवल पृथ्वी पर बल्कि परमेश्वर के राज्य में भी लाभ प्राप्त करेंगे।

आने वाला वर्ष हमारे प्रत्येक के जीवन में समृद्ध फसल दें। प्रभु यीशु के लिए अच्छे कार्य करना जारी रखें और प्रत्येक दिन प्रभु के अनंत राज्य में प्रवेश करने का प्रयास करें!

मसीह में आपकी बहन,

पास्टर सरोजा म।

परमेश्वर से एक बनके रहो।

रोमियों 11: 24 ''क्योंकि यदि तू उस जैतून से, जो स्वभाव से जंगली है, काटा गया और स्वभाव के विरुद्ध अच्छे जैतून में साटा गया, तो ये जो स्वाभाविक डालियाँ हैं, अपने ही जैतून में क्यों न साटे जाएँगे।'' जब प्रभु यीशु इस पृथ्वी पर रहते थे, तो उन्होंने कई चमत्कार किए। उन चमत्कारों में से एक था की उन्होंने एक अंधे को ठीक किया था, यीशु ने उसे गाँव से बहार ले जाकर उसके अंधेपन को चंगा किया और उससे पूछा ''ऊपर देखो और तुम क्या देखते हो?'' हाल ही में ठीक हुए नेत्रहीन व्यक्ति क्या देखता है, आइए पढ़ें मरकुस 8: 23–24 ''23 वह उस अंधे का हाथ पकड़कर उसे गाँव के बाहर ले गया, और उसकी आँखों में थूककर उस पर हाथ रखे, और उससे पूछा, "क्या तू कुछ देखता है?" 24 उस ने आँख उठा कर कहा, "मैं मनुष्यों को देखता हूँ; वे मुझे चलते हुए पेड़ों जैसे दिखाई देते हैं।'' वह पुरुषों को ऊंचे पेड़ों के रूप में चलते हुए देखता है। पवित्र शास्त्र में, प्रभु ने धर्मी मनुष्यों की तुलना जैतून और देवदार के वृक्षों से की है। अधर्मी मनुष्यों की तुलना जंगली जैतून के पेड़ों से की जाती है, जो फलदायी नहीं है। लेकिन, हमारे प्रभु यीशु मसीह इस दुनिया में जंगली और अधपके पेड़ को फलदार बनाने के लिए आए हैं। आज भी कई किसान ऐसे पेड़ों को साटते हैं जो फलदार नहीं होते हैं और वे फलदार पेड़ों के साथ होते हैं। यह काम प्रेरित पौलुस के शासनकाल के दौरान शुरू हुआ था, इस तरह के जंगली और बिना फलदार पेड़ों को फलने–फूलने के लिए तैयार किया गया था, आइए हम पढ़ते हैं रोमियों 11: 17 ''पर यदि कुछ डालियाँ तोड़ दी गईं, और तू जंगली जैतून होकर उनमें साटा गया, और जैतून की जड़ की चिकनाई का भागी हुआ है,'' परमेश्वर पिता ने यही किया, ताकि अब्राहम के परिवार को दुनिया के अन्यजातियों के साथ मिलाया जा सके। इसके अलावा, यीशु मसीह को इस दुनिया में भेजा गया था, ताकि जंगली और बिना फलदायक लोग उनके साथ रहें और इस तरह उन्हें अपने जीवन में स्वीकार करें और फलदायी बनें। हम सभी एक समय शत्रु के बेटा और बेटी थे, हम अब्राहम के परिवार से संबंधित नहीं थे, लेकिन जब क्रूस पर यीशु मसीह की मृत्यु हुई, उनके लहू से हम सभी उनके साथ जुड़ गए और अब्राहम का परिवार बन गए। यहाँ हम अपने प्रभु के अद्भुत कार्यों को देखते हैं कि कैसे उन्होंने हमारे जीवन को फलदायी बना दिया, जैसे उन्होंने जंगली जैतून के पेड़ को फलदायी जैतून में बदल दिया और इस तरह हमारे जीवन को फलदायी बना दिया। प्रेरित पौलुस कहता है इफिसियों 2: 12–13 ''12 तुम लोग उस समय मसीह से अलग, और इस्राएल की प्रजा के पद से अलग किए हुए, और प्रतिज्ञा की वाचाओं के भागी न थे, और आशाहीन और जगत में ईश्वररहित थे। 13 पर अब मसीह यीशु में तुम जो पहले दूर थे, मसीह के लहू के द्वारा निकट हो गए हो।'' साटने के बाद, हमारा जीवन जैतून के पेड़ से और भी ज़्यादा अधिक फलदायी हो गया है। जैसे जंगली जैतून का पेड़ अधिक मजबूत और अधिक

फलदायी हो गया और उसका फल अब फलदार जैतून के पेड़ से भी अधिक मीठा और समृद्ध था। इसी तरह, जब हम अपने जीवन की तुलना करते हैं जैसे कि हम अन्यजातियों से आते हैं, यीशु ने हमारे जीवन को अपने साथ जोड़ लिया है, इस प्रकार हमारे जीवन यहूदियों के जीवन से अधिक धन्य हो गए हैं जो परमेश्वर के चुने हुए लोग हैं। यह सच्चाई है, आज भी यहूदी यह नहीं मानते हैं कि यीशु मसीह पहले ही इस धरती पर आ चुके हैं और अपने लोगों के लिए अपना प्राण दे चुके हैं। इस प्रकार उनके अविश्वास के कारण, उनका जीवन अभी भी दुखद और दर्दनाक है, उनके जीवन में कोई शांति नहीं है, आज भी वे वेलिंग दिवार पर खड़े हैं और मसीहा के आने और उन्हें बचाने के लिए रोते हैं। उनके लिए यीशु मसीह केवल एक बढ़ई का बेटा था। लेकिन हमारा विश्वास अलग है, हमारा मानना यह है कि प्रभु यीशु पहले ही इस दुनिया में हमारे लिए आ चुके हैं और हमें उनके साथ साट चुके हैं अर्थात उनके लिए जंगली जैतून के पेड़ के साथ फलदायी जैतून वृक्ष जो की वे खुद प्रभु रूप में है और उन्होंने हमारे लिए अपने जीवन को क्रूस पर बलिदान करके हमारे जीवन को फलदायी बना दिया है। उसने हमें अब्राहम के परिवार के रूप में बनाया है और हमें जीवन में फलदायी बनाया है।

यीशु मसीह की छवि में बढ़ना हमारे लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि परमेश्वर पिता ने हमें अपने पुत्र यीशु मसीह के साथ साट के तैयार किया है। आइए पढ़ें भजन संहिता 148 : 9 –14 ''9 हे पहाड़ो और सब टीलो, हे फलदाई वृक्षो और सब देवदारो! 10 हे वन–पशुओ और सब घरेलू पशुओ, हे रेंगनेवाले जन्तुओ और हे पक्षियो! 11 हे पृथ्वी के राजाओ, और राज्य राज्य के सब लोगो, हे हाकिमो और पृथ्वी के सब न्यायियो! 12 हे जवानो और कुमारियो, हे पुरनियो और बालको! 13 यहोवा के नाम की स्तुति करो, क्योंकि केवल उसी का नाम महान् है; उसका ऐश्वर्य पृथ्वी और आकाश के ऊपर है। 14 उसने अपनी प्रजा के लिये एक सींग ऊँचा किया है; यह उसके सब भक्तों के लिये अर्थात् इस्राएलियों के लिये और उसके समीप रहनेवाली प्रजा के लिये स्तुति करने का विषय है। याह की स्तुति करो!'' बस प्रभु की स्तुति, धन्यवाद और प्रशंसा करना जारी रखें और यीशु मसीह की छवि में आगे बढ़ें, यह एक सलाह है जो सभी को दी जाती है चाहे वह छोटे, बड़े, बूढ़े हो इत्यादि। इस प्रकार, प्रभु कहते हैं कि सभी जंगली और बिना फलवाले पेड़, प्रभु यीशु की प्रशंसा और आराधना करना जारी रखें। हमें अपने जीवन में यीशु मसीह के बलिदान को कभी नहीं भूलना चाहिए। परमेश्वर जंगल में उनकी यात्रा के दौरान इस्राएलियों के बीच में थे, ताकि वे परमेश्वर के साथ रहें, परमेश्वर ने मूसा से बात की निर्गमन 25: 10 ''बबूल की लकड़ी का एक सन्दूक बनाया जाए; उसकी लम्बाई ढाई हाथ, और चौड़ाई और ऊँचाई डेढ़ डेढ़ हाथ की हों।'' परमेश्वर ने उन्हें बबूल के पेड़ से जुड़ने को कहा। हम देखते हैं कि परमेश्वर ने हमें एक प्रकार का वृक्ष दिया है जिससे परमेश्वर के साथ जुड़ सकें और एक प्रकार का वृक्ष परमेश्वर के कार्य के लिए। आइए हम पढ़ें वचन 13 ''फिर बबूल की लकड़ी के डण्डे बनवाना, और उन्हें भी सोने से मढ़वाना।'' निर्गमन 26: 15 ''फिर निवास को खड़ा करने के लिये बबूल की लकड़ी के तख्ते बनवाना।'' इस प्रकार, परमेश्वर ने इस्राएलियों को बबूल के पेड़ से अपने लिए भेंट लाने को कहा था। प्रभु परमेश्वर ने उन्हें आगे बताया कि वह एक प्रसन्न और हर्षित देनेवाले लोग पसंद करते हैं, जो लोग इस पेड़ को ढूंढते हैं और इसे बड़ी मुश्किल से काटते हैं और उसे चढ़ाते हैं, वह उन्हें भरपूर आशीर्वाद देंगे। निर्गमन 25 : 1–5 ''1 यहोवा ने मूसा से कहा, 2 "इस्राएलियों से यह कहना कि मेरे लिये भेंट लाएँ; जितने अपनी इच्छा से देना चाहें उन्हीं सभों से मेरी भेंट लेना। 3 और जिन वस्तुओं की भेंट उनसे लेनी है वे ये हैं; अर्थात् सोना, चाँदी, पीतल, 4 नीले, बैंजनी और लाल रंग का कपड़ा, सूक्ष्म सनी का कपड़ा, बकरी का बाल,

5 लाल रंग से रंगी हुई मेढ़ों की खालें, सुइसों की खालें, बबूल की लकड़ी,'' परमेश्वर ने मूसा को बताया कि वह बबूल के पेड़ को केवल इस्त्राएलियों से उसके लिए भेंट के रूप में चाहते थे। जबकि अन्य सभी चीजें उनके गाँव के भीतर ही उपलब्ध थीं, बबूल का पेड़ सरहद पर पाया जाता था। इस प्रकार, जो कोई भी इस पेड़ को खोजने के लिए परेशानी उठाएगा, उसे काटेगा और उसे प्रभु के सामने भेंट के रूप में लाएगा, बहुतायत से धन्य हो जाएगा। उत्पत्ति 14: 10 ''सिद्दीम नामक तराई में जहाँ लसार मिट्टी के गड़हे ही गड़हे थे; सदोम और अमोरा के राजा भागते भागते उनमें गिर पड़े, और जो बचे वे पहाड़ पर भाग गए।'' बबूल का पेड़ लोगों को आसानी से उपलब्ध नहीं था क्योंकि यह कम था, बड़ी खोज के बाद ही लोग इस पेड़ को पा सकते थे। इसलिए इस बबूल के पेड़ को बहुत कठिन परिश्रम के बाद ही प्रभु के पास लाया जा सकता था, इस प्रकार प्रभु को उनकी मेहनत की भेंट चढ़ा दिया जाता थी, उनका आशीर्वाद प्राप्त हो जाता था। बहुत से लोग जब वे कड़ी मेहनत करते हैं, तो कड़ी मेहनत के पैसे के साथ भाग लेना पसंद नहीं करते हैं, वे गुरगुरावट और बड़बड़ाहट करते हैं, वे दो मनसा में होते हैं कि उनकी मेहनत की कमाई के साथ भाग लेना है या नहीं। इस प्रकार 'वचन' कहता है कि प्रभु एक खुशहाल और हंसमुख देनेवाले से प्रेम करते है। आइए हम फिर से पढ़ें निर्गमन 25: 1–5 ''1 यहोवा ने मूसा से कहा, 2 "इस्राएलियों से यह कहना कि मेरे लिये भेंट लाएँ; जितने अपनी इच्छा से देना चाहें उन्हीं सभों से मेरी भेंट लेना। 3 और जिन वस्तुओं की भेंट उनसे लेनी है वे ये हैं; अर्थात् सोना, चाँदी, पीतल, 4 नीले, बैंजनी और लाल रंग का कपड़ा, सूक्ष्म सनी का कपड़ा, बकरी का बाल, 5 लाल रंग से रंगी हुई मेढ़ों की खालें, सुइसों की खालें, बबूल की लकड़ी,'' इस प्रकार जब हम एक हर्षित देनेवाले बनते हैं, तो हम हमेशा ऐसे ही बबूल के पेड़ कि तरह रहेंगे जो प्रभु के साथ जुड़ा हो। हमारे प्रभु उनके आशीर्वाद को मापते नहीं हैं वे अनगिनत हैं और माप से परे हैं, जैसे हम उन्हें भेंट देते समय करते हैं। हमारे लिए हमारे प्रभु का माप है कि उनके हाथ जो भरकर उमड़ता है।

आओ पढ़ते हैं योएल 3: 18 ''उस समय पहाड़ों से नया दाखमधु टपकने लगेगा, और टीलों से दूध बहने लगेगा, और यहूदा देश के सब नाले जल से भर जाएँगे; और यहोवा के भवन में से एक सोता फूट निकलेगा, जिससे शित्तीम की घाटी सींची जाएगी।'' प्रभु हम पर अपना आशीर्वाद कहाँ से भेजते है? उनके पवित्र पर्वत से, मधु और दूध यहूदिया की सभी नदियों में बहेंगी। ये प्रभु का आशीर्वाद है, जब हम उन्हें खुशी–खुशी वापस देते हैं। चाहे हमारी भेंट, समय, विश्वास, ह्रदय हो, यह हमेशा हर्षित होना चाहिए। आइए हम पढ़ें यशायाह 55: 12–13 12 "क्योंकि तुम आनन्द के साथ निकलोगे, और शान्ति के साथ पहुँचाए जाओगे; तुम्हारे आगे आगे पहाड़ और पहाड़ियाँ गला खोलकर जयजयकार करेंगी, और मैदान के सब वृक्ष आनन्द के मारे ताली बजाएँगे। 13 तब भटकटैयों के बदले सनौवर उगेंगे; और बिच्छू पेड़ों के बदले मेंहदी उगेगी; और इस से यहोवा का नाम होगा, जो सदा का चिह्न होगा और कभी न मिटेगा।'' जब इस्त्राएलियों को जो मूसा और हारून की तरह रहना पसंद नहीं लगा, उन्होंने परमेश्वर के चुने हुए सेवकों के खिलाफ बड़बड़ाना शुरू कर दिया, तो परमेश्वर ने लोगों को देखने के लिए एक परीक्षण भेजा। गिनती 17: 1–5 ''1 तब यहोवा ने मूसा से कहा, 2 "इस्राएलियों से बातें करके उन के पूर्वजों के घरानों के अनुसार, उनके सब प्रधानों के पास से एक एक छड़ी ले; और उन बारह छड़ियों में से एक एक पर एक एक के मूल पुरुष का नाम लिख, 3 और लेवियों की छड़ी पर हारून का नाम लिख। क्योंकि इस्राएलियों के पूर्वजों के घरानों के एक एक मुख्य पुरुष की एक एक छड़ी होगी। 4और उन छड़ियों को मिलापवाले तम्बू में साक्षीपत्र के आगे, जहाँ मैं तुम लोगों से मिला करता हूँ रख दे। 5 और जिस पुरुष को मैं चुनूँगा उसकी छड़ी में कलियाँ फूट निकलेंगी; और इस्राएली जो

तुम पर बुड़बुड़ाते रहते हैं, वह बुड़बुड़ाना मैं अपने ऊपर से दूर करूँगा।'' मूसा ने वैसे ही किया जैसे परमेश्वर ने उससे बात की थी। आइए हम आगे पढ़ते हैं वचन 7–8 ''7 उन छड़ियों को मूसा ने साक्षीपत्र के तम्बू में यहोवा के सामने रख दिया। 8 दूसरे दिन मूसा साक्षीपत्र के तम्बू में गया; तो क्या देखा कि हारून की छड़ी जो लेवी के घराने के लिये थी उस में कलियाँ फूट निकलीं, अर्थात् उसमें कलियाँ लगीं, और फूल भी फूले, और पके बादाम भी लगे हैं।'' यह अद्‌भुत चमत्कार है जिसे परमेश्वर ने किया था, जब हम उनके साथ बने रहते हैं। यहाँ हम देखते हैं कि सूखे हुए छड़ से प्रभु ने उस पर फूल और फल खिला दिए हैं। इसी तरह प्रभु हमारे दुःख और बिना फल के जीवन को धन्य कर सकते हैं और इसे एक बार फिर से खिला सकते हैं। इस प्रकार, हमारा पूरा विश्वास केवल उसी पर होना चाहिए। हमें कभी भी उनके खिलाफ गुरगुरावट और बड़बड़ाना नहीं चाहिए, जैसा कि इस्राएलियों ने किया। मूसा और हारून ने हमेशा परमेश्वर की आज्ञा मानी, इस प्रकार परमेश्वर ने इस्राएलियों के सामने उनकी सूखी छड़ों पर यह चमत्कार किया। हमें याद रखना चाहिए कि ऐसा कोई काम नहीं है जो परमेश्वर के लिए असंभव हो। यहां हम देखते हैं कि सूखे हुए छड़ी से, सीधे फूल और फल खिलते हैं। जब हम इस तरह के अद्‌भुत परमेश्वर को मानते हैं, तो पढ़ते हैं यशायाह 40: 29 ''वह थके हुए को बल देता है और शक्तिहीन को बहुत सामर्थ देता है।'' प्रभु कमजोर और थके हुए को बल देते हैं। प्रभु अपने लोगों का सम्मान करते हैं जो हमेशा उनकी उपस्थिति में होते हैं और उनके साथ रहते हैं। 1 इतिहास 16: 27–34 ''27 उसके चारों ओर वैभव और ऐश्वर्य है; उसके स्थान में सामर्थ्य और आनन्द है। 28 हे देश देश के कुलो, यहोवा का गुणानुवाद करो, यहोवा की महिमा और सामर्थ को मानो। 29 यहोवा के नाम की महिमा ऐसी मानो जो उसके नाम के योग्य है। भेंट लेकर उसके सम्मुख आओ, पवित्रता से शोभायमान होकर यहोवा को दण्डवत् करो। 30 हे सारी पृथ्वी के लोगो, उसके सामने थरथराओ! जगत ऐसा स्थिर है, कि वह टलने का नहीं। 31 आकाश आनन्द करे और पृथ्वी मगन हो, और जाति जाति में लोग कहें, "यहोवा राजा हुआ है।" 32 समुद्र और उस में की सब वस्तुएँ गरज उठें, मैदान और जो कुछ उसमें है वह प्रफुल्लित हो। 33 उसी समय वन के वृक्ष यहोवा के सामने जयजयकार करें, क्योंकि वह पृथ्वी का न्याय करने को आनेवाला है। 34 यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि वह भला है; उसकी करुणा सदा की है।'' परमेश्वर अब पृथ्वी का न्याय करने के लिए आएंगे, इसलिए, आइए हम उनके उपस्थिति में ही रहने का फैसला करें। यशायाह 60: 13 ''लबानोन का वैभव अर्थात् सनौबर और देवदार और चीड़ के पेड़ एक साथ तेरे पास आएँगे कि मेरे पवित्रस्थान को सुशोभित करें; और मैं अपने चरणों के स्थान को महिमा दूँगा।'' ये पेड़ गर्मी में आसानी से सूखते नहीं हैं। यशायाह 41: 19 ''मैं जंगल में देवदार, बबूल, मेंहदी, और जैतून उगाऊँगा, मैं अराबा में सनौबर, चिनार, और चीड़ इकट्ठे लगाऊँगा,'' ये पेड़ आसानी से जंगल में पाए जाते हैं।याकूब ने इन पेड़ों के महत्व को पहचाना। आइए हम पढ़ें उत्पत्ति 30: 37 – 39 ''37 तब याकूब ने चिनार, और बादाम, और अर्मोन वृक्षों की हरी–हरी छड़ियाँ लेकर, उनके छिलके कहीं कहीं छील के, उन्हें धारीदार बना दिया, ऐसी कि उन छड़ियों की सफेदी दिखाई देने लगी। 38 तब छीली हुई छड़ियों को भेड़–बकरियों के सामने उनके पानी पीने के कठौतों में खड़ा किया; और जब वे पानी पीने के लिये आईं तब गाभिन हो गईं। 39 छड़ियों के सामने गाभिन होकर, भेड़–बकरियाँ धारीवाले, चित्तीवाले और चितकबरे बच्चे जनीं।'' इन विशाल वृक्षों के रहस्य को पहचानना महत्वपूर्ण है जिनके बारे में परमेश्वर ने कहा है। यह रहस्य याकूब को पता था। जंगल में जब याकूब मुसीबत में था, तो वह जानता था कि कैसे इन पेड़ों का इस्तेमाल भेड़ों की प्रजनन क्षमता के लिए किया जाता था और उसकी भेड़ें कैसे बढ़ती थीं। उत्पत्ति 30: 43 ''इस प्रकार वह

पुरुष अत्यन्त धनाढ्य हो गया, और उसके बहुत सी भेड़—बकरियाँ, और दासियाँ और दास, और ऊँट और गदहे हो गए।'' इस वजह से वह एक अमीर आदमी बन गया, यही वह रहस्य था जो याकूब ने सीखा था। इसलिए, प्रभु के बच्चे समृद्ध होते हैं, ये पेड़ धन्य पेड़ हैं जो प्रभु के बच्चों के जीवन में आशीर्वाद लाते हैं। हम कांटेदार और जंगली लोग हैं, लेकिन जब यीशु मसीह के साथ जुड़ जाते है, तो हम फलदायी और समृद्ध हो जाते हैं। यहाँ हम देखते हैं कि पशु भी समृद्ध हो जाते हैं, इसलिए हम कौन हैं? हम प्रभु की रचना में उनकी स्वयं की छवि हैं। जब हम प्रभु के साथ जुड़ जाते हैं, तो प्रभु उनके रहस्यों को हमारे साथ प्रकट करेंगे, जैसे प्रभु ने अपने रहस्यों को याकूब को बताया। आइए हम पढ़ें यिर्मयाह 33ः 3 ''मुझ से प्रार्थना कर और मैं तेरी सुनकर तुझे बड़ी—बड़ी और कठिन बातें बताऊँगा जिन्हें तू अभी नहीं समझता।'' हमारा परमेश्वर चमत्कारों का परमेश्वर है। आइए पढ़ें भजन संहिता 32ः 8 ''मैं तुझे बुद्धि दूँगा, और जिस मार्ग में तुझे चलना होगा उस में तेरी अगुवाई करूँगा; मैं तुझ पर कृपादृष्टि रखूँगा और सम्मति दिया करूँगा।'' परमेश्वर हमें ज्ञान देंगे और हमें उस तरीके से सिखाएंगे, जिसकी हमें जरूरत है। हमारा परमेश्वर एक निष्पक्ष परमेश्वर है। आइए हम पढ़ें यशायाह 45ः 3—4 ''3 मैं तुझ को अन्धकार में छिपा हुआ और गुप्त स्थानों में गड़ा हुआ धन दूँगा, जिस से तू जाने कि मैं इस्राएल का परमेश्वर यहोवा हूँ जो तुझे नाम लेकर बुलाता है। 4 अपने दास याकूब और अपने चुने हुए इस्राएल के निमित्त मैं ने नाम लेकर तुझे बुलाया है; यद्यपि तू मुझे नहीं जानता, तौभी मैं ने तुझे पदवी दी है।'' हमारा प्रभु हमें जीवन में शक्तिशाली और महान चीजें दिखाएंगे। वह हमें अंधेरे के खजाने और गुप्त स्थानों के छिपे हुए धन को देंगे, ठीक उसी तरह जैसे उन्होंने याकूब को शक्तिशाली रहस्य दिखाया था। प्रभु ने जीवन में हमारे लिए कई रहस्य रखे हैं, ताकि हम जीवन में धनवान और समृद्ध बनें।

यह संदेश आप सभी को आशीर्वाद दे। प्रभु की स्तुति हो !

पास्टर सरोजा म।